Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2025 6(2),21–26

NATURE AS INSPIRATION IN THE ART OF ARTIST VINCENT VANGOGH

कलाकार विंसेंट वॉनगॉग की कला में प्रेरणा रूप प्रकृति

Renu [1], Sonika [2]

[1] Research Scholar, Dh 563 Ward No.16 Rawat Gym, New Colony Sallagarh, Palwal, Haryana-121102, India
[2] Assistant Professore, Department of Drawing and Painting, Dayalbagh Educational Institute (Deemed to be University), Agra, India

Corresponding Author
Renu, Nainakatara4@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v6.i2.2025.5598

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2025 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Vincent Van Gogh, the renowned Western artist born in the Netherlands, was a unique talent with a nature-loving personality. Nature has influenced humanity in every sphere, which various artists have presented to the world through their works, such as poets in poetry, writers in articles, musicians in music, and painters in their paintings. According to Vincent, "If you truly love nature, you will find beauty everywhere." Vincent Van Gogh presented his perspective on nature through his works. He was an introverted personality since childhood, which deepened his connection with nature. He had a system of communication with trees, plants, flowers, mountains, and birds. Vincent's mind was always restless and filled with detachment. In this world, he became absorbed in nature in search of his goal, where he found peace and solace. Vincent captured every moment of nature's light and color on his canvas instantly, even capturing the wind in the bushes and wheat waves, leaving the audience amazed. He was an artist who didn't worry about his physical well-being but was more concerned with capturing every moment of nature. Having colors, canvas, and brushes was enough for him, even without food. The scorching sun rays couldn't stop him from painting, but due to various reasons, Vincent's physical and mental health began to deteriorate. Despite this, he didn't abandon painting; instead, he merged his inner state with nature and created masterpieces. This unconquerable spirit is what has given him an indelible image in the world.

Hindi: पश्चिम के प्रसिद्ध कलाकार,, नीदरलैंड में जन्मे विन्सेंट वॉनगॉग एक विलक्षणी प्रतिभा के प्रकृति प्रेमी स्वभाव के थे। प्रकृति ने मनुष्य को हर क्षेत्र में प्रभावित किया है, जिसे विभिन्न कलाकारों ने, जैसे - कवि ने कविताओं में, लेखक ने लेख में, संगीतकार ने अपने संगीत में और चित्रकार ने अपने चित्रों में संसार के सम्मुख प्रस्तुत किया है। विन्सेंट के अनुसार ''यदि आप सचमुच प्रकृति से प्रेम करते हैं, तो आपको हर जगह सुंदरता मिलेगी।'' विंसेंट वॉनगॉग ने अपनी कृतियों के माध्यम से अपना प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है। वह बचपन से ही एकांत प्रिय व्यक्तित्व के थे, इस कारण वे प्रकृति से अपना रिश्ता गहरा करते चले गए। वह पेड़, पोधो, फूल, पहाड़ और पक्षियों के प्रति एक संप्रेषण की प्रणाली रखते थे। विन्सेंट का मन सदैव अशांत व विरक्तता से भरा रहता था। वे इस संसार में अपने लक्ष्य की खोज की ललक में प्रकृति में ही समाहित होने लगे, क्योंकि यहां उन्हें शांति और सुकून की प्राप्ति होती थी। विन्सेंट ने प्रकृति के प्रत्येक क्षण के प्रकाश तथा रंग को तत्क्षण अपने कैनवास में कैद किया यहां तक कि झाड़ियों और गेहूं की लहर में हवा को भी कैद कर दर्शकों को विस्मित् कर दिया। यह एक ऐसे कलाकार थे, जिन्हें अपने शरीर की चिंता ना होकर, प्रकृति के प्रत्येक प्रहर को चित्रित करने की अधिक चिंता होती थी। उनके पास खाने के लिए कुछ हो न हो, परंतु रंग, कैनवास और ब्रश पर्याप्त होने चाहिए, तो वे इसी में संतुष्ट रहते थे। सूर्य की उग्र किरणें भी उन्हें निरंतर चित्र बनने से नहीं रोक पाई, परंतु कई कारणों वश विंसेंट की शारीरिक व मानसिक क्षति होने लगी, जिसके चलते भी उन्होंने चित्रों को बनाना त्यागा नहीं, बल्कि अपनी उस समय की आंतरिक स्थिति को प्रकृति के साथ विलय कर श्रेष्ठ कृतियों का निर्माण किया। इसी अपराजित वृत्ति के कारण ही आज संसार में वह अपनी एक अविभाजित छवि का निर्माण कर सकें है।

Keywords: Unique, Detached, Unconquerable Spirit, Intense, Merge, Amazed, Instantly
विलक्षणी, विरक्त, अपराजित वृत्ति, उग्र, विलय, विस्मित्, तत्क्षण

1. प्रस्तावना

विन्सेंट वॉनगॉग (सन् 1853 ईस्वी-सन् 1890 ईस्वी) एक डच चित्रकार थे, जिन्हें पोस्टइम्प्रेशनिज्म के प्रमुख कलाकारों में से एक माना जाता है। विंसेंट ने चित्रकला को अपने जीवन के अंतिम 10 वर्ष दिए, इन वर्षों में उन्होंने लगभग 1,000 चित्र और 1,600 से अधिक रेखाचित्र बनाए। उनके चित्र उनकी आंतरिक स्थिति व उनके आसपास के वातावरण से बहुत प्रभावित थे, जिनके आधार पर उनकी रंग पैलेट भी समय के बदलाव के साथ बदलती रहती थी। उनकी कला के एक महान प्रेरक के रूप में प्रकृति इस प्रसिद्ध उद्धरण में परिलक्षित होती है ''प्राकृतिक कला में मनुष्य का समावेश है।'' प्रकृति विंसेंट के लिए न केवल प्रेरणा का स्रोत थी, अपितु सहजता और नैतिक शक्ति का भी स्त्रोत थी। उन्होंने अपनी कलाकृति द्वारा प्रकृति के प्रति अपने जुनून और आध्यात्मिक अनुभवों को प्रस्तुत किया है। वह प्रकृति के असाधारण सुंदरता के क्षणभंगुर क्षणों से मोहित थे, उदाहरण के लिए, उन्होंने गेहूं के खेत को बदलते मौसम की हर दृश्य की श्रृंखला को उत्साहपूर्वक तैयार किया। गेहूं के खेत (द व्हीट फील्डद्ध) सेंट-रेमी-डी-प्रोवेंस के शरणालय में विंसेंट द्वारा बनाई गई, तेल चित्रों की एक श्रृंखला है। यह दृश्य वह अपने शयन कक्ष की खिड़की से देखा करते थे। यह खेत पत्थर की दीवारों से घिरा हुआ था। मई सन् 1889 ईस्वी से मई सन् 1890 ईस्वी तक विन्सेंट ने इस खेत के परिदृश्यों को कैनवास में कैद किया। प्रथम चित्र ताजे गेहूं के उगने के साथ और बसंत के फूलों के साथ चित्रित किया। चित्र सं.1. इसके पश्चात् जून सन् 1889 ईस्वी में चित्रित किया। विन्सेंट के मन में इन गेहूं के प्रति कोमल भावना थी। वे इसे एक बच्चे की तरह मानते थे। उनके अनुसार ''युवा गेहूं में कुछ ऐसा होता है, जो अवर्णनीय रूप से शुद्ध और कोमल होता है, जो एक सोते हुए बच्चे की अभिव्यक्ति के समान ही भावना को जागृत करते है।''चित्र सं.2. जून के अंत में विंसेंट ने रीपर (फसल काटने वाला) के साथ सूरज और गेहूं के खेत को चित्रित किया। चित्र सं.3. जुलाई में उन्होंने गेहूं के ढेर और उगते हुए चंद्रमा को चित्रित किया। यहां गेहूं ने ढेर की जगह ले ली है। यह फीका पीला, गेरू और बैंगनी रंग का है। विंसेंट ने यह चित्र बिमारी के दौर से पहले शुरू किया था।चित्र सं.4. सितंबर सन् 1889 ईस्वी में विंसेंट ने अगला चित्र धूप में भीगे हुए गेहूं के खेत में एक रीपर को दर्शाया है। बाइबिल के एक रूपक का सार देते हुए, उन्होंने इस चित्र के अर्थ में लिखा है ''इस रीपर में एक अस्पष्ट आकृति है, जो अपने काम को पूरा करने के लिए भयानक गर्मी में शैतान की तरह मेहनत कर रहा है। मैंने इसमें मृत्यु एक छवि देखी है, गेहूं, मानव जाति का प्रतिनिधित्व करता है, जो शैतान के हाथों द्वारा काटा जा रहा है। चित्र सं.5. नवंबर सन् 1889 ईस्वी में उन्होंने रंग की विकर्ण रेखाओं द्वारा गिरती वर्षा को दर्शाया है। पृष्ठभूमि में हरा भरा खेत चित्रित किया है, आसमान में घने काले बादल है। यह शैली उन्हें जापानी प्रिंट की याद दिलाती है। चित्र सं.6. दिसंबर में विंसेंट ने उगते सूरज के साथ गेहूं के खेत चित्रित किया है यह काम पीले, हरे, बैगनी के पूरक रंगों में युवा गेहूं के खेत के ऊपर सूर्योदय दिखता है। इस चित्र में शांति, महान शांति व्यक्त करने की कोशिश की है। चित्र सं.7 wikipedia (2024)

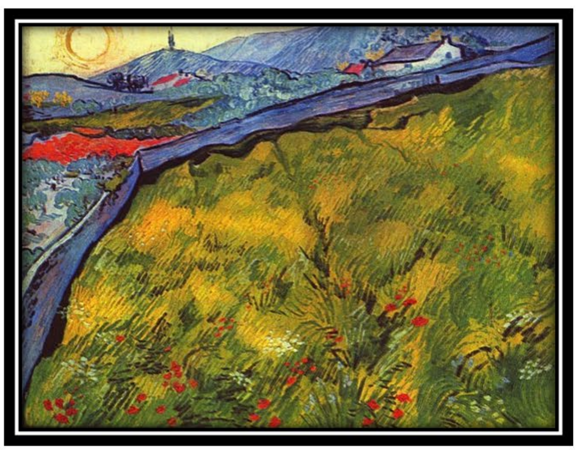

चित्र संख्या.1 गेहूं के खेत उगते सूरज के साथ,मई सन् 1889 ईस्वी

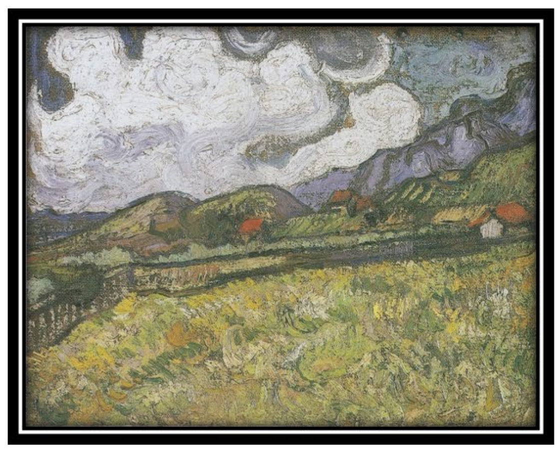

चित्र संख्या.2 गेहूं के खेत, जून सन् 1889 ईस्वी

चित्र संख्या. 3 गेहूं के खेत रीपर के साथ, जून के अंत में सन् 1889 ईस्वी, कैनवास पर तैल

चित्र संख्या.4 गेहूं के ढ़ेर उगते चन्द्रमा के साथ, जुलाई सन् 1889 ईस्वी

चित्र संख्या. 5 गेहूं के खेत रीपर के साथ, सितम्बर सन् 1889 ईस्वी

चित्र संख्या. 6 वर्षा में गेहूं के खेत, नवम्बर सन् 1889 ईस्वी

चित्र संख्या. 7 उगते सूरज के साथ गेहूं दिसम्बर सन् 1889 ईस्वी

बचपन में ग्रामीण इलाकों में व्यतीत की गई अवधि ने उन्हें उनके व्यक्तित्व पर एक महत्वपूर्ण छाप छोड़ी और उनके व्यक्तित्व का एक खास बन गई यही कारण है कि वैन गॉग ने प्रकाश प्राकृतिक द्रश्य परिदृश्यों पर एक अमूल्य निर्भरता बनाए रखी प्रकृति के साथ सहजीवन में काम किया। ग्रामीण

प्रकृति विन्सेंट की प्रथम रुचि थी, तत्पश्चात पेरिस के शहरी वातावरण और आल्स में प्रकृति के चमकदार रंगों के उल्लास के लिए मार्ग प्रशस्त किया। विंसेंट का प्रकृति के साथ अविश्वसनीय रिश्ता था। वह फूलों, पेड़ों और खेतों किसी भी प्राकृतिक परिदृश्य को चित्रित करने के लिए, उसका सार पकड़ने में सक्षम थे, साथ ही यह उनके अंदर उत्पन्न होने वाली भावनाओं को भी दर्शाता था। विन्सेंट के अनुसार ''एक कलाकार को प्रकृति को सही मायने में जानना और समझना चाहिए, ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका प्रकृति के बीच रहना, अछूते ग्रामीण इलाकों में रहना तथा वहां काम करना, लोगों के खेतों को देखना।'' विंसेंट नोर्ड ब्रैबेंट प्रांत के एक गांव में पले-बढ़े। जहाँ खेत और प्रकृति हमेशा पास में ही रहती थी। उन्होंने अपना पूरा जीवन यापन घर से बाहर जैसे-पेरिस, लंदन, हेग, आल्स, ईटन, बोरिनेज तथा न्यूनेन आदि जगहों पर किया। वे चाहे कहीं भी रहे, उन्होंने चित्र बनाने और मन की शांति पाने के लिए प्रकृति की खोज जारी रखी। ऐसा लगता है, मानो विंसेंट के परिदृश्यों में ऊर्जा संकुचित है। उन्होंने चाहें जिस भी मौसम में काम किया हो, यह उससे निकलने वाली कच्ची शक्ति है जो आगे जाकर उन्हें और अन्य कई कलाकारों के लिए भव्य ऊर्जा शक्ति का स्रोत बनती है।

''कभी कभी मैं भू-दृश्यांकन करने के लिए बहुत लालयित रहता हूँ, जैसे कोई व्यक्ति अपने आपको तरोताजा करने के लिए लंबी सैर पर जाता है, मैं संपूर्ण प्रकृति में, वृक्षों में, अभिव्यक्ति और आत्मा देखता हूं। विंसेंट थियो से , हेग 10 दिसंबर सन् 1882 ईस्वी Hockney (2018)

विंसेंट के अन्य प्रकृति चित्रों में साइप्रस ;सरू के वृक्षद्ध सबसे अधिक प्रसिद्ध विषय है। उन्हें तुलिका घात के सौंदर्य और भावनाओं को अनुभव कर उनकी क्षमता के साहसिक उपयोग के लिए जाना जाता है। जीवंत नीले आसमान के नीचे एक मैदान में ऊंचे पतले पेड़ों का आश्चर्यजनक चित्रण किया है। यह चित्र न केवल प्राकृतिक दुनिया की छवि है, बल्कि कलाकार के अंतर्मन विचारों की एक शक्तिशाली अभिव्यक्ति भी है और भाव नाओं का ऐतिहासिक संदर्भ भी। सरू वृक्ष का चित्र विंसेंट ने सन् 1889 ईस्वी में सेंट पॉल डेमासिल शरणालय, सेंट रेमिटा प्रांत, फ्रांस में रहते हुए चित्रित किया। चित्र सं.8. मानसिक रूप से विघटन होने के पश्चात् उन्होंने स्वेच्छा से ही खुद को इस शरणालय में भर्ती कराया और इस जगह ही उन्होंने अपने सबसे प्रसिद्ध कार्यों में से स्टारी नाइट, साइप्रस जैसे चित्रों का चित्रण किया। साइप्रस एक आकर्षक कृति है। यह अपने मोटे तुलिका घात, साहसी विरोधी रंग और मजबूत संरचना के साथ दर्शकों का ध्यान आकर्षित करती है। जिसके ऊंचे गहरे साइप्रस के पेड़ आसमान पर हावी होते दर्शित हो रहे हैं। पहाड़ों में घूमता नीला आसमान एक आश्चर्यजनक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। घुमावदार तूलिका घात, मोटे और अभिवंजक है, जो चित्र को गति और जीवन शक्ति की भावना देते है। चित्र में विरोधी रंग सामंजस्य और संतुलन की भावना उत्पन्न करते हैं। विन्सेंट नें यह चित्र शरणालय में रहते हुए मानसिक विघटन के दौरान चित्रित किया। ऐसी स्थिति होते हुए भी, उन्होंने प्रकृति का अन्वेषण करना त्यागा नहीं, उन्हें जब भी बाहर जाने की अनुमति मिलती, वे प्रकृति में एक नई विचारशैली की खोज में निकल जाते थे। उनके लिए वृक्ष के एक ताने से लेकर फूल तक, उसके हर रंग से लेकर चमक तक, प्रत्येक भाग को वह एक प्रतीक के रूप में देखे थे। उन्होंने पेड़-पौधों को सदैव एक जीवित प्राणी के रूप में देखा। उनकी स्थिति देख वे उनके दुःख, दर्द व खुशी को अनुभव करते थे। वृक्षों का लहराना उनके लिए उनके साथ एक संप्रेषण लगता था। उन्होंने अपने जीवन की प्रत्येक घटना को प्रकृति में छिपा देखा, जो उन्होंने कैनवास पर उतारना शुरू कर दिया। वह अपने अंदर की स्थिति को अपने भाई थियों के अलावा किसी से भी सांझा करने में सहज महसूस नहीं करते थे, कई बार वे सिर्फ स्वयं से ही रंग और तूलिका धातों द्वारा कैनवास से सांझा करते थे। विंसेंट ने साइप्रस चित्र में इन वृक्षों को मृत्यु अनंत काल के जीवन के प्रतीक के रूप में देखा और वह प्रायः इन्हें अपने चित्र में अपनी मृत्यु के अनुभव के प्रतिक रूप में चित्रित करते थे। पृष्ठभूमि में रोलिंग पहाड़ में घूमता आसमान आंदोलन और स्थिरता की भावना का संकेत देता है, जो विंसेंट की आंतरिक उथल-पुथल और भावनात्मक संघर्ष को प्रतिनिधित्व करता है। चित्र में जीवंत रंग, उनके प्रकृति प्रेम और कठिन समय के दौरान भी दुनिया में सुंदरता खोजने की उनकी क्षमता का परिणाम प्रमाण है। यह चित्र आज भी दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर रहा है और मानव रचनात्मक और अभिव्यक्ति की स्थाई शक्ति के प्रमाण के रूप में खड़ा है। द स्टारी नाइट चित्र विंसेंट की सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से एक है। चित्र में अभिव्यक्तिवादी शैली के सर्पिले घातों से परिपूर्ण इसका भव्य गतिमय घूमता हुआ रात्रि आसमान आज भी दर्शकों को सशक्त भावनात्मक प्रतिक्रिया का अनुभव करता है। यह चित्र उनकी खिड़की से दिखने वाले दृश्य पर आधारित है। समीक्षकों के अनुसार ''विंसेंट ने यह कृति मानसिक विघटन के दौरान उत्तेजित अवस्था में बनाई थी, जो प्रकृति के गहरे रंगों, हवा में लहराते वृक्षों और आकाश में तारामंडल की हलचल में परिलक्षित होता है। encyclopedia (2023)'' विंसेंट के अनुसार ''रात दिन से अधिक जीवंत होती है।'' उन्होंने दिन में प्रकृति का भिन्न दृष्टि से अध्ययन किया और वहीं रात में प्रकृति उन्हें कुछ और दृश्य दिखाती थी। उन्होंने भाई थियो को एक पत्र में इसका उल्लेख 'रात के अध्ययन' में किया था।

चित्र संख्या 8. साइप्रस, सन् 1889 ईस्वी

चित्र संख्या 9.द स्टारी नाइट, सन् 1889 ईस्वी

विंसेंट की कला में प्रायः प्रकृति के बीच एक एकांत को बार-बार देखते है। उनके इस चित्र 'एवेन्यू ऑफ पोलार्ड बर्चेज एंड पॉपुलर' सन् 1884 ईस्वी में एक महिला की एकाकी आकृति है, जो शॉल में लिपटी हुई पीछे से दिखाई दे रही है। चित्र संख्या 10. जो पोलार्ड बर्च और पॉपुलर के बीच रास्ते में चल रही है, दोनों ओर वृक्षों के बीच आकृति छोटी होने के कारण मुश्किल से दिखाई दे रही है दोनों और वृक्ष आकृति पर हावी होते परिलक्षित हो रहे हैं। विंसेंट का यह चित्र एक कविता से प्रेरित था, जिसमें ऊंचे वृक्षों वाली गली में विलाप करती विधवा का वर्णन किया गया था। चित्र एक उदासी भरे वातावरण को दर्शाता है। चित्र के रंग बहुत गहरे हैं, जिसमें पेड़ों से छनकर प्रकाश थोड़ा बहुत सड़क पर फैला हुआ दिखाई दे रहा है। दृश्य एक अंधकारमय सुरंग की भांति है, जो उस आकृति को अंत में प्रकाश की ओर ले जा रहा है। विन्सेंट ने यहां भी प्रकृति द्वारा व्यक्ति के जीवन में उदासी, अंधकार व उम्मीद का दृश्य अनुभव कराया है। विंसेंट ने अपने भाई थियो को लिखा ''कभी-कभी मैं परिदृश्यों को चित्रित करना चाहता हूं, जैसे मैं खुद को तरोताजा करने के लिए टहलने के लिए तरसता हूं, लेकिन प्रकृति के सामने वह भावनाएं मुझ पर हावी हो जाती है, वह बेहोशी की हद तक पहुंच जाती है और फिर इसका परिणाम यह होता है, कि मैं दो हफ्ते तक काम करने में असमर्थ रहता हूं।'' सन् 1884 ईस्वी में बनाए गए उनके पिता के बगीचे में कटे हुए वृक्षों का चित्र (पेन और स्याही) में एक चमकदार सूरज इन पत्ती रहित जीवों पर अपनी गर्माहट से पूर्ण रोशनी डालता है, जो अपनी बाहें आसमान की ओर उठाते हैं, जैसे कि प्रार्थना कर रहे हो। चित्र संख्या 11. चित्र में विन्सेंट ने सूखे वृक्षों को अपने रूखे जीवन के स्थान पर दर्शाया है, जिसमें विंसेंट आसमान से हरियाली की आशा में प्रार्थना कर रहे है। विंसेंट ने प्रकृति और कला को अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ देखा है। 'द हीलिंग पावर ऑफ नेचर' में उनके पत्रों के अंश प्रकृति की सुंदरता में मिली प्रेरणा को देखने के लिए चुने गए हैं। इन पत्रों में प्रकृति के छोटे-छोटे नमूने देखने को मिलते हैं। Salatino (2023)

चित्र सं.10 एवेन्यु ऑफ पोलार्ड बर्चेज एंड पॉपलर सन् 1884 ईस्वी

चित्र सं. 11 पोलार्ड, सन् 1884 ईस्वी

चिकित्सालय में भर्ती होने के बाद वह परिवार के साथ रहने के लिए चले गए थे। उनके पिता का एक बड़ा बगीचा था। वह वहां कीटों के नमूने इकट्ठा करते, पौधों का अध्ययन करते, पक्षियों पर दृष्टि बनाए रखते। यह सब उनकी बहनों में से एक को किसी छोटे बच्चों का रूप लगता था, जो विंसेंट में दिखाई देता था। वह अपने पत्रों में सिर्फ फूलों, सूरज की रोशनी, वातावरण, पक्षियों, वृक्ष इनका वर्णन करते थे। उन्होंने अपने चित्रों में गेहूं के ढेर, चिड़ियों के घोंसले, सूखे पेड़, स्थिर वस्तुओं आदि विषयों को चित्रित किया। वह जितना प्रकृति के निकट गए प्रकृतिवाद में उन्हें और अंदर धकेल दिया। वे घने जंगलों में चित्र बनाने लगे, जहां सूरज की रोशनी कहीं बहुत कम होती, कहीं छनकर आती। उन्होंने पेड़ों की तनों को चित्रित किया, जिसमें नीचे की भूमि पर, वृक्षों के आसपास की झाड़ियां को भी चित्रित किया। उनकी दृष्टि निरंतर सूक्ष्म होती जा रही थी। वह बहुत सूक्ष्मता के साथ प्रकृति को समझ रहे थे। वृक्ष और झाड़ियां की उन्होंने बहुतायत चित्र बनाएं। Thomas (1997)

इसके अतिरिक्त विंसेंट ने जैतून के पेड़, आइरिस के फूल, बादाम के पेड़ इत्यादि विषय पर भी काम किया। विंसेंट के लिए प्रकृति की प्रत्येक वस्तु जीवन के विभिन्न भागों से संबंधित प्रतीकों के रूप में दृष्टव्य होती है। जीवन-मरण से लेकर दुख-उल्लास और शक्ति से लेकर शांति से लेकर शोर तक, प्रकृति सब व्यक्त करती है। विंसेंट की जैसी मनोदशा होती, प्रकृति उसी रूप में दिखाई देती थी, जैसे उन्होंने उदासीनता की अवस्था में 'द विपिंग ट्री' चित्र बनाया, जो वास्तव में रोता हुआ प्रतीत होता है। चित्र संख्या 12. अपने जीवन के अंतिम दिनों में भी वह प्रकृति में खोए हुए थे और चित्रण कर रहे थे। उनके अंतिम चित्रों में 'वृक्ष की जड़े' है। यह चित्र विंसेंट के अंतिम क्षणों में प्रेरणा थी। चित्र संख्या 13. अपनी मृत्यु से पहले उन्होंने जीवन से परिपूर्ण एक जंगल में जाकर इस दृश्य को चित्रित किया। लुइस वैन टिलबोर्ग ने पेड़ों की जड़ों का विश्लेषण करते हुए बताया कि ''जड़ें गेहूं के खेत की भयावह प्रकृति से अलग होकर हरे, नीले और भूरे रंग से भारी पैलेट के साथ धरती से उखड़ी हुई और खतरनाक तरीके से लटकती हुई दिखाई दे रही है।'' चित्र को देखकर यह अनुभव होता है, कि बहुत ज्यादा वर्षा होने के कारण वृक्ष की जड़े उजागर हो गई है और वह गिरने की स्थिति में पहुंच गई है। विंसेंट अपने बिगड़ती मानसिक स्थिति से अवगत थे, इसीलिए इस कार्य को उनकी तरफ से विदाई संदेश के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार वह अंत तक प्रकृति से जुड़े रहे और उसका विश्लेषण करते रहे। वह जो कुछ अपने शब्दों में दुनिया से नहीं कह पाए, वह सब उन्होंने प्रकृति द्वारा कैनवास पर लिख दिया। उनके पत्र, विचार व चित्र आज भी संसार के लिए अध्ययन की सामग्री बने हुए हैं, जिनका निरंतर शोध कार्य आज भी जारी है।

चित्र सं. 12 द विपिंग ट्री, अप्रैल सन् 1888 ईस्वी
रीड पेन, इंक, चैक कागज पर

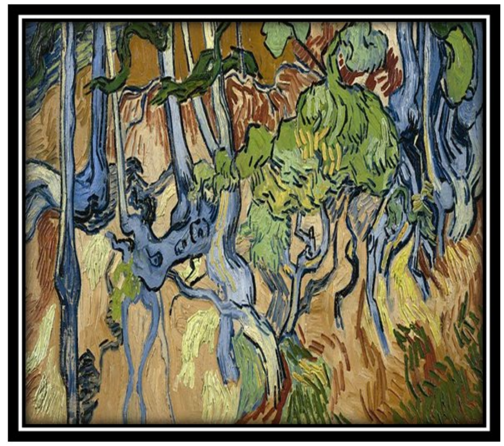

चित्र सं. 13 वृक्ष की जड़ें सन् 1890 ईस्वी

मुख्य बिंदु- पोस्ट-इम्प्रेषनिज्म, आन्तरिक स्थिति, परिलक्षित, क्षणभंगुर, परिदृष्य, अभिव्यंजक, सामंजस्य, मानसिक विघटन, साइप्रस, सर्पिले, पोलार्ड, भयावह।

REFERENCES

encyclopedia, t. a. (2023, march 23). Talking Art Encyclopedia. Retrieved july 28, 2024, from Vincent Van Gogh Cypresses a Masterpiece of Nature and Emotion: https://www.youtube.com/watch?v=SdNJ0FKoJJ4

Hockney, D. (2018, february 21). Hockney on Van Gogh. Retrieved june 15, 2024, from Hockney on Vangogh Web Site: https://www.vangoghmuseum.nl/en/stories/hockney-van-gogh-two-painters-one-love

Salatino, K. (2023, May 23). Vangogh and the Nature of Solitude. Retrieved May 23, 2023, from Vangogh and the Nature of Solitute Web Site: https://www.artic.edu/articles/813/van-gogh-and-the-nature-of-solitude

Thomas, D. (1997). Van Gogh on Location. usa: Regency House publishing.

wikipedia. (2024, november 11). The Wheat Field. Retrieved july 24, 2024, from The Wheat Field web site: https://en.wikipedia.org/wiki/The_Wheat_Field